# DAY-9 20-12-2025 – शनिवार - LEVEL-2 A&B



| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 9 | 20/12/25 (शनिवार) | 1 | लोकगीत (सारांश) | - |

## भाग -III Q.NO.13 - 8M

**प्र 13.** लोकगीत भारत के अनंत स्वेच्छ जीवन के प्रतीक है। इसे पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(या)

लोकगीत ग्रामीण जनता के मनोरंजक साधन होते हैं । इस कथन को स्पष्ट कीजिए ।

उ.) परिचय : यह प्रश्न **"लोकगीत"** पाठ से दिया गया है।

**पाठ का नाम** : लोकगीत

**लेखक** : भगवतशरण उपाध्याय जी

**जीवनकाल** : 1910 – 1982

**रचनाएँ** : कालिदास का भारत, गंगा गोदावरी

सारांश:

★ लोकगीत साधारण जनता का संगीत होते हैं।

★ लोकगीतों की रचना अधिकतर गाँवों के स्त्री-पुरुष करते हैं।

★ ये साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की मदद से गाए जाते हैं।

★ पहाड़ियों के अपने लोकगीत होते हैं।

★ बारहमासा – उत्तर प्रदेश, बिरहिया – भोजपुरी, माहिया – पंजाबी, ढोला-मारू – राजस्थान, बाउल – बंगाल में लोकप्रिय लोकगीत हैं।

★ लोकगीतों की भाषा सरल, सहज और जन-भाषा होती है।

★ लोकगीत शास्त्रीय संगीत से अलग होते हैं और सादगी से भरपूर होते हैं।

★ भारत के विभिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न लोकगीत प्रचलित हैं।

★ लोकगीत जीवन के सुख-दुःख और भावनाओं का सच्चा चित्र प्रस्तुत करते हैं।

उपसंहार : **भारत के अनगिनत लोकगीत यहाँ के स्वच्छ और सरल जीवन का प्रतीक हैं।**